[This question paper contains 4 printed pages.]

**Your Roll No..............**

**Sr. No. of Question Paper : 9336** **IC**

Unique Paper Code : 62051404

Name of the Paper : Hindi 'A' (हिंदी 'ए')

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi 'A' – CBCS**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

**Instructions for Candidates**

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.

2. **All** questions are compulsory.

**छात्रों के लिए निर्देश**

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

P.T.O.

1 निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (20)

(क) "न मुझे विद्वता की चाह है, न अनुभव की, न मर्मज्ञता की, न कार्य-कुशलता की। इन गुणों के महत्त्व का परिचय खूब पा चुका हूँ। अब सौभाग्य और सुअवसर ने मुझे वह मोती दे दिया है, जिसके सामने योग्यता और विद्वता की चमक फीकी पड़ जाती है। यह कलम लीजिए और अधिक सोच-विचार न कीजिए, दस्तखत कर दीजिए। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि आपको सदैव वही नदी के किनारे वाला, बेमुरव्वत, उद्दण्ड, कठोर परन्तु धर्मनिष्ठ दरोगा बनाये रखे।"

अथवा

"अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए, अपनी इच्छा पूरी करने के लिए तुमने मुझे बनाया है। पर, यह ज़रूरी नहीं कि मैं तुम्हारी इच्छानुसार ही चलूँ, मेरा अपना अस्तित्व भी है, मेरे अपने विचार भी हैं।" मैं चिल्ला उठी, "जानते हो, तुम किससे बात कर रहे हो ? वह हँस पड़ा, मैं तुम्हारी स्रष्टा हूँ, तुम्हारी निर्माता! मेरी इच्छा से बाहर तुम्हारा कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं!"

(ख) परन्तु मनुष्य की चरितार्थता प्रेम में है, मैत्री में है, त्याग में है, अपने को सबके मंगल के लिए निःशेष भाव से दे देने में है। नाखूनों का बढ़ना मनुष्य की उस अंध सहजात वृत्ति का परिणाम

है, जो उसके जीवन में सफलता ले आना चाहती है, उसको काट देना उस स्व-निर्धारित आत्म-बंधन का फल है, जो उसे चरितार्थता की ओर ले जाती है।

अथवा

इसके उपरांत घीसा अच्छा हो गया और धूल और सूखी पत्तियों को बाँध कर उन्मत्त के समान घूमने वाली गर्मी की हवा से उसका रोज संग्राम छिड़ने लगा-झाड़ते-झाड़ते ही वह पाठशाला धूल-धूसरित होकर भूरे, पीले और कुछ हरे पत्तों की चादर में छिप कर तथा कंकालशेषी शाखाओं में उलझते, सूखे पत्तों को पुकारते वायु की संतप्त सरसर से मुखरित होकर उस भ्रांत बालक को चिढ़ाने लगती।

2. हिन्दी कहानी की विकास-यात्रा को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

हिंदी उपन्यास की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

3. 'मलबे का मालिक' कहानी की संवेदना को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

'पुरस्कार' कहानी में राष्ट्रीय भावना एवं व्यक्ति चेतना के द्वन्द्व का चित्रण है - विवेचन कीजिए।

4. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध में लेखक ने मनुष्य की किस मूलभूत समस्या पर विचार किया है? स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध का सार लिखिए।

5. 'अंधेर नगरी' में चित्रित व्यंग्य की विभिन्न स्थितियों को सोदाहरण प्रस्तुत कीजिए। (12)

अथवा

'घीसा' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

6. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए :- (7)

(क) प्रसादयुगीन नाटक ;

(ख) प्रेमचंदयुगीन कहानी।